Item Code: 948 Participant Code: 326

पारिस्थितिक स्वच्छता और समाज

आज के ज़माने में पारिस्थितिक स्वच्छता का महत्व बढ़ती जा रही है। हम एक परिस्थिति में जीता है जो स्वच्छ होना चाहिए। मनुष्य को जीने केलिए एक स्वच्छ परिस्थिति आवश्य ही है। और वह उनका ज़रूरी आदत भी है। महामारियों के इस समाज में पारिस्थितिक स्वच्छता को आवश्यकता बढ़ रही है। एक मनुष्य को जीने केलिए एक शुद्ध परिस्थिति का आवश्य है। खाना-पीना, घर, कपड़ा आदी मनुष्य को प्राथमिक आवश्य है। इस प्राथमिक आवश्यों को साकार करने केलिए उन्हें एक स्वच्छ परिस्थिति की ज़रूरती है।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

* पारिस्थितिक स्वच्छता मनुष्य को एक केवल शब्द है। उन्होंने ने स्वच्छता को कोई मूल्य नही देती है। उन्हें अपना कार्य के बारे में मात्र सोचता है। मनुष्य कुद अपने पारिस्थिति को बुरा करता है। और कुद पारिस्थितिक प्रश्नों का अनुभव करता है। पारिस्थितिक स्वच्छता को साकार करने केलिए हम मनुष्य चींता करनी है।

* पारिस्थितिक स्वच्छता की आवश्यकता

आज हमारे संसार में अनेक महामारियाँ है। उस महामारियों से मनुष्य की जीवन को प्रश्न कर डालती है। हम अपने परिस्थिति को स्वच्छ बनाना है क्योंकि बुरा परिस्थिति से अनेक बीमारियाँ फैलता है। कालरा, डेंगू, टैफोइड

चिकनगुन्या आदि जैसे अनेक बीमारियाँ फैलता है। इस बीमारियों से मनुष्य की जीवन को प्रश्न में डालता है। बुरा परिस्थिति से अनेक कीडाणु बढ़ जाता है। उस कीडाणु अनेक वाहक के सहारा मनुष्य शरीर पर आता है और मनुष्य को स्वास्त को बुरी तरह की हालत ले आता है। यह जैसे कीडाणु मनुष्य के गिनती को कम करता है। मलिन जल पर प्राणीयों का गण्य प्रजनन होता है। उस मलिन जल से अनेक बीमारियाँ आता है। मलिन जल हमारे शुद्ध जल पर आते है हमारे शुद्ध जल भी मलिन हो जाता है।

हमारे संसार में अनेक राज्यों में इन जैसे बीमारियों को फैलना है। अब हम हमारे इन्डिया के

बारे में सोचते वक्त हमको पता चलता है कि पारिस्थितिक को बुरा स्वच्छता से अनेक बीमारियाँ आता है। इसके गिनती हमारे भारत में पच्चास प्रतिशत के बड़े है। इस बीमारियों से मनुष्य की मृत्यु की प्रतिशत भी पच्चास प्रतिशत के बड़ा है। हमारे पुर्व भारत में इन बीमारियों का गिनती बढ जा रही है। वह स्थलों बड़े मकान, फ्लाटों और बड़े लोगों से संपन्न है लेकिन उनके स्वच्छता के बारे में देखते वक्त वह पराजय बन जाता है। बड़े स्थल जैसे मुंबई, दिल्ली जैसे स्थानों के बारे में देखते वक्त वहाँ के पारिस्थिति आज भी मनुष्य वास केलिए अच्छा नही है। मलिन जल, प्रदूषण, वायु प्रदूषण आदि से वहाँ वासयोग्य नही है। मनुष्य को जीने केलिए एक

पारिस्थिति को आवश्यकता है। इसलिए पारिस्थितिक स्वच्छता का महत्व आज के समाज में बड़ा है।

"स्वच्छ पारिस्थिति में
स्वच्छ स्वस्त"

हमारे समाज में आज एक स्वच्छ पारिस्थिति का आवश्यता केवल एक बात नही है। मनुष्य को इस धरती में कोई और सदियों को जीनेकेलिए यह एक बहुत बडी बात है।

* परिस्थिति के बुरी हालत

आज के समाज में हमारे परिस्थिति एक अच्छा हालत पर नही है। सारे जगहों मलिन है। और लोगों प्रदूषण से

मुश्किल से जीता है। प्रदूषण आज बढ रहा है। इसलिए हमारे पर्यावरण मलिन है।

प्रदूषण आज विविध है।

- वायु प्रदूषण
- जल प्रदूषण
- शब्द प्रदूषण
- प्रकाश प्रदूषण

• वायु प्रदूषण : हमको श्वसन करने केलिए शुद्ध वायु की आवश्यकता है। हमको आज अशुद्ध वायु मिलता है। शुद्ध वायु की कमी अब हम अनुभव करता है। हमारे भारत की मुख्य स्थल दिल्ली। आज प्रदूषण की परेशानियाँ अनुभव करता है। लोगों को श्वास के संबंधित बीमारियाँ आता है। आज शुद्ध वायु बाजारों से खरीदने की अवस्था

आ गई है। यह हमको सोचना नही सकता। आगे जीवन में सारे व्यक्ति को शुद्ध वायु खरीदने की अवस्था होगी। गाड़ियों से बुरे हवा आकर हमारी वायु को मलिन करता है। वायु प्रदूषण आज एक बड़ी समस्या बन रही है।

• जल प्रदूषण : हमको अच्छे जल की आवश्यकता है जीने केलिए। लेकिन आज हमको अच्छे जल कम मिल रहा है। मनुष्य को परिस्थिति को सामने की बुरे अहसास से हमारी जल-स्त्रोतसों प्रदूषित हो जाता है। जल स्त्रोतसों आज के जमाने में कूड़े-दान के रूप में लोग मानता है। इसलिए वह प्लास्टिक जैसे कूड़े को जल-स्त्रोतसों में डालता है। फिर मनुष्य स्वयं बुरे अनुभवों से दुःख हो जाता है

जल का संरक्षण हमारे जिम्मेदारी है।
— महात्मा गांधी

हमारे राष्ट्रपिता भी इस प्रदूषण के बारे में बता गया है। पानी एक आवश्य साधन पानी के बिना हमको जीना नही सकता है।

• शब्द प्रदूषण : आज बड़े कार्यक्रम में शब्द के अधिक उपयोग होता है। शादी जैसे कार्यकम में बड़े धूम-धाम करनेकेलिए बड़े स्पीकर से गाना सुनता है। इसलिए सुनने की हमारी आदत कम होती है। फिर हमको कोई सुनने नही आता है।

• प्रकाश प्रदूषण : यह भी शब्द प्रदूषण की समान धूम-धाम से होता है। हमको आँखें बिना कुछ नही कर सकता है। हमारे आँखें को सारे बीमारियाँ होता है।

इन प्रदूषण से हमारे परिस्थिति अब स्वच्छ नही है।

"प्रदूषण एक समस्या है जो हमारे जीवन को स्वस्थ नष्ट कर डालता है।"
—ग्रेटा इनबर्ग

* बुरा पारिस्थितिक स्वच्छता की समस्या समाज में

हमारे संसार एक बड़े महामारी से मुक्त हो गया है। जो है कोविड -19। उस महामारी में हमारे पारिस्थितिक और कुद का स्वच्छता एक बड़ा हान्य ले गया था। स्वच्छता से हमको दूर वह महामारी को धुर करना पड़ा। लेकिन अब हमारे संसार में एक महामारी आ गया है। जो हम शोसल मीडिया और अकबारों से समझ गया है। जो है एच एम पी वी वह एक शासकोश संबंधित बीमारि है। वह बीमारी अब हमारे भारत में भी

आ गया है। इस महामारी को भी दूर करने केलिए हमको हमारे और हमारे परिस्थिति को स्वच्छ रखने की जरूरत है।

"उपरोध है चिकित्सा से बेहतरीन"

इसलिए हमको महामारियों से भी दूर करने केलिए हमारे परिस्थती स्वच्छ बना रखना जरूरत है।

परिस्थिति को स्वच्छ करने केलिए क्या-क्या करनी है?

यह समस्या समाज के हर व्यक्ति की मन की समस्या है। हमारी दायित्व है हम जीते परिस्थिति को स्वच्छ बना रखना इसको इसलिए हमको कई प्रवरतियाँ करनी है। इस प्रवरतियाँ एक मानव की दायित्व है।

हम हमारे घर और उसके चारों की परिसरों को स्वच्छ बना रखनी है। जैसे हर व्यक्ति सोचता तो हमारे भूमि के हर परिस्तिथी स्वच्छ होगा। हमारे धरती में स्वच्छता फैलते होगा। हमारे सरकार अनेक नए मिशन बढ लिया है परिस्तिथिक स्वच्छता केलिए। सरकार के इस मिशनों को हम आगे बढना है। जैसा हमारा परिसर स्वच्छ होगा। हम हमारे परिस्थिति स्वच्छ करने से हम इस मनोहर धरती को भी स्वच्छ बना रखता है। हमारे पूर्विक हमारे लिए एक स्वच्छ धरती को संभाला। इसलिए हमको भी एक स्वच्छ परिस्थिति को बढाना है। हमारे पूर्विक के काल में महामारियों की गिनती और मलिन अवस्ता से बने ~~बीमि~~ बीमारियों का भी गिनती कम था।

इसका कारण क्या है स्वच्छ परिस्थिति था। इसलिए हमको भी हमारी धरती स्वच्छ बनाना चाहिए। यह हर व्यक्ति का दायित्व है। हमारे भारत में 'स्वच्छ भारत मिशन' है परिस्थिति को स्वच्छ बनाने केलिए। यह जैसे मिशन को आगे बढ़ाना है। हम विद्यार्थी लोग आगे जीवन को वागदान है। इसलिए हम अपने धरती को स्वच्छ बना रखना आवश्य है। हम अपने घर और स्कूल की परिसरों स्वच्छ बना रखना है। यह हमारे आवश्य है। ऐसे करना हमारी उत्तरदायित्व है। ऐसे हमको बीमारियों की गिनती कम करने का आशा साकार करना पड़ेगी।

हमारे परिस्थिति को मलिन करनेवालों पर हम कानून रखना है।

बड़ा रुपया शिक्षा की रूप में उन लोगों देनी चाहिए। ऐसा करना एक बड़ी कार्य होगा स्वच्छता केलिए।

केरल में हरित कर्म सेना है। उन लोगों हमारे घर आकार कूड़े एकत्रकर ले जाते हैं। और अनेक घरों से एकत्रते कूड़े एक जगह पर एक साथ निरचल करता है। ऐसे हमारी परिस्थिति स्वच्छ बनेंगा।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को एक बड़े आशा था स्वच्छ भारत। यह साकार करने केलिए हम हर व्यक्ति अपने परिसर को स्वच्छ बना रखना एक आवश्य कार्य है। उनको आशा साकार करना हमारी कर्तव्य है।

स्वच्छ परिस्थिती से हमारे स्वस्त भी बेहतरीन होगा। शुद्ध जल, वायु

जल से हमारी जीवन भी अच्छे होगा। स्वच्छ परिस्थिति हर व्यक्ति को खुश देगा। आरोग्य पूर्ण जीवन हर व्यक्ति के लिए एक वरदान है। हमारी परिस्तिथी की स्वच्छता हमारे मात्र को कर्तव्य है। हम स्वच्छ बना रखना ही है। स्वच्छ परिसर में सारे जीव-जंतु सुख से जी सकता है। समाज के एक बड़ी समस्या मुक्त होगा। स्वच्छता हमारी प्रथम कार्य होना है।

"स्वस्थ अवस्ता से
स्वस्थ जीवन मिलेगा।"

केरल के एक गायिका प्रसीता चालकुड़ी ने हमारे आगे संसार के बारे में एक गीत गाया। उस अवस्ता भयानक है।

इसलिए हमको परिस्थिती को स्वच्छ बना रखना ही है। वह हर व्यक्ति को दायित्व है। जैसे हमको एक सुंदर धरती बना पड़ेगा। हम इस पीढ़ी के लोग आगे पीढ़ी को उत्तेजन होना है। इसलिए पारिस्थितक स्वच्छ एक दिनचर्या बनाना है।